मधुवन ओम् शान्ति अंक 256 नवम्बर 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-10-13)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा योगयुक्त, युक्तियुक्त, राज़युक्त हो चलने वाले, देही-अभिमानी स्थिति द्वारा परमात्म प्यार में समाने वाले सभी निमित्त टीचर्स बहिनें, देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे मीठे बाबा ने हम सब बच्चों को ज्ञान रत्नों से खेलना सिखाया है। ज्ञान, योग और ड्रामा की गहराई के राज़ों को समझ गये हैं इसलिए सदा राज़ी रहते हैं और राज़युक्त होकर चलते हैं। कोई भी दृश्य देखते, सुनते संकल्पों में भी हलचल नहीं होती इसलिए संकल्पों की एनर्जी जमा है। संगम के समय का बहुत-बहुत कदर है, एक सेकण्ड, एक श्वांस भी व्यर्थ नहीं जा सकता। जिन बातों से मेरा कोई मतलब नहीं, उसमें जाना व्यर्थ है। बोलो, ऐसा ही ध्यान रख संकल्प, बोल की एनर्जी जमा करते विश्व कल्याण की सेवा में सदा तत्पर रहते हो ना! अब तो अपने बोलने, सोचने पर ध्यान दे करके ज्ञानी तू आत्मा बन निरन्तर योगी बनना है।

वर्तमान समय तो चारों ओर विकारों की अति और प्रकृति की हलचल अपना विकराल रूप दिखा रही है। कहाँ अर्थक्वेक हो रहा है, तो कहाँ फ्लड आ रहा है। कभी कोई विकार फुल फोर्स से उछलता है, तो कभी कोई... रोज़ ऐसी खबरें सुनने देखने में आती हैं तो मैं क्या करती हूँ? क्या सुनकर एक दो को सुनाती रहूँ, यही काम करूँ! अगर मुझे टाइम की वैल्यु है, समय की पहचान मिली है, तो ऐसे समय पर अच्छी तरह से मन्सा शुद्ध और श्रेष्ठ शुभ संकल्प से सेवा करनी है तब तो मेरा बाबा मेरे से खुश होगा। मन्सा द्वारा शुभ भावना से, वाचा द्वारा शुभ कामना से और कर्मणा द्वारा ईश्वरीय स्नेहयुक्त सम्बन्ध से सेवा करके सफलता मूर्त बनना है। समय प्रमाण बाबा की मुख्य शिक्षा है बच्चे संग का ख्याल रखो। कोई भी मुरली मिस नहीं करो। योग अग्नि में विकर्म विनाश करो। अगर अभी तक विकर्म विनाश नहीं हुए हैं तो योग अग्नि की गहराई में जाओ। ज्वालामुखी योग तब होगा जब अन्दर लगन की अग्नि तेज होगी। लेकिन जो करना है वह अब कर लो। कल किसने देखा! सदा यही बुद्धि में रहे कि बाबा करा रहा है, मुझे करना है।

अगर और और बातें सुनते सुनाते हैं, तो जरा सोचो कि मेरी मन्सा कैसी है? हमारा फर्ज़ कहता है हमारी मन्सा बड़ी शुद्ध और शक्तिशाली हो। अब मन्सा पर विशेष अटेन्शन दो। वाचा सिर्फ ज्ञान सुनाने के लिए नहीं है, लेकिन मुख से शब्द ऐसे निकलें जो सबको बाबा की याद आ जाये। अभी मैं यह जो बोल रही हूँ, सारे विश्व के बाबा के बच्चे याद आ रहे हैं। तो मेरी यह भावना है कि हर एक अपने को बाबा का सच्चा बच्चा बनाये, सच्चे बाप के साथ सच्चा रहे, तो सच्चे दिल पर साहेब राज़ी।

देखो भारत में तो अभी त्योहारों की भरमार चल रही है। नवरात्रि, विजयदशमी (दशहरा), फिर दीपावली और भैया दूज, यह भी कितने सुन्दर संगमयुग के यादगार हैं, जिसमें अनेक आध्यात्मिक रहस्य समाये हुए हैं, सभी को इन त्योहारों की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां। बाकी अभी तो बाबा के बेहद घर में डबल विदेशी बच्चों की रिमझिम शुरू हो गई है। विदेश की सभी मुख्य बड़ी बहिनें मधुबन पहुंच गई हैं। कॉल आफ टाइम और पीस ऑफ माइन्ड रिट्रीट में भी अनेक देशों से बहुत अच्छे मेहमान आये और खूब भरपूर होकर गये। अभी फिर बाबा के नये पुराने बच्चे बापदादा संग मिलन मनाने वरदानों से झोली भरने आते रहेंगे। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

कर्मयोग द्वारा कर्मभोग पर विजय प्राप्त करो

1) विजयी रत्न बनने के लिए कर्मयोग द्वारा कर्मभोग पर विजय प्राप्त करो। सदा यही स्मृति रहे कि यह भोगना नहीं लेकिन नई दुनिया के लिए योजना है। फुर्सत मिलती है ना, फुर्सत का काम ही क्या है? नई योजना बनाना। तो पलंग भी प्लैनिंग का स्थान बन जाए।

2) जैसे पार्ट बजाने समय चोला धारण करते हो, कार्य समाप्त हुआ चोला उतारा। ऐसे इस देह रूपी चोले से सेकण्ड में न्यारे बनने की प्रैक्टिस करो तो कर्मभोग समाप्त हो जायेगा। जैसे इन्जेक्शन लगाकर दर्द को खत्म कर देते हैं, हठयोगी शरीर से न्यारा होने का अभ्यास करते हैं। ऐसे ही यह स्मृति स्वरूप का इंजेक्शन लगाकर, देह की स्मृति से गायब हो जाओ।

3) जितना अशरीरी अवस्था का अभ्यास होता जायेगा उतना कर्मभोग की भासना समाप्त होती जायेगी। जैसे इंजेक्शन के नशे में बोलते हैं, हिलते हैं, सभी कुछ करते भी स्मृति नहीं रहती है। कर रहे हैं, यह स्मृति नहीं रहती है। स्वत: ही होता रहता है। वैसे कर्मभोग व कर्म किसी भी प्रकार का चलता रहेगा लेकिन स्मृति नहीं रहेगी। वह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा।

4) जब कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपनी तरफ आकर्षित कर रही हों, बहुत दर्द हो रहा हो। ''टग ऑफ वार'' का समय हो। ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने के लिए साक्षी हो कर्मेन्द्रियों से भोगवाने वाले बनो, ऐसे समय पर अष्ट शक्तियां कायम रहें तब विजयी बन अष्ट रत्नों में आ सकेंगे।

5) कलियुग के कर्मभोग की निशानी – कोई लखपति है लेकिन एक रूपये का भी सुख स्वयं नहीं ले सकता। ऐसे अगर आप सर्वशक्तियों के खजाने का मालिक हो लेकिन स्वयं के प्रति एक छोटी-सी शक्ति भी यूज़ नहीं कर पाते तो क्या कहेंगे? क्या अभी-अभी संगमयुगी हो, अभी-अभी एक पाँव कलियुग में रख दिया! चेक करो और चेंज करो।

6) कर्मयोगी को कर्म आकर्षित नहीं कर सकता। योगी अपनी योगशक्ति द्वारा कर्मेन्द्रियों से कर्म कराता है। जो कर्म के वश होकर चलने वाले हैं वे कर्म के भोग के वश हो जाते हैं अर्थात् कर्म के भोग भोगने में अच्छे व बुरे में कर्म के वशीभूत हो जाते हैं। आप श्रेष्ठ आत्मायें तो कर्मातीत अर्थात् कर्म के अधीन नहीं, कर्मों के परतन्त्र नहीं, स्वतन्त्र हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाले कर्मयोगी हो इसलिए कर्मभोग आपको परवश नहीं बना सकता।

7) चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रूप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे-समान अनुभव होगा। भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्तू करने में औषधी का रूप बन जाती है। खुशी दवाई की खुराक बन जाती है।

8) सदा स्वस्थ अर्थात् सदा स्व में स्थित रहने से तन का कर्मभोग भी कर्मयोग से सूली से काँटा हो जाता है। कर्मभोग को भी बेहद के ड्रामा के अन्दर खेल समझकर खेलते हैं। तो तन का रोग योग में परिवर्तन हो गया इसलिए सदा स्वस्थ हो। बीमारी को बीमारी नहीं समझना क्योंकि अनेक जन्मों का बोझ हल्का हो रहा है।

9) आजकल के समय अनुसार जो बहुत जन्मों के हिसाब-किताब अर्थात् कर्मभोग हैं वह समाप्त भी जरुर होने हैं। कर्मभोग का हिसाब खत्म करने के लिए स्थूल दवाई और कर्मयोगी बनाने के लिए यह रुहानी दवाई। अभी सब भोग मन्सा द्वारा चाहे शरीर द्वारा भोगकर खत्म करेंगे तब मुक्तिधाम में जायेंगे।

10) यह कर्मभोग – कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ – यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब-किताब का दृश्य देखते रहेंगे। बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दु:ख वा दर्द का अनुभव नहीं करेंगे। सूली से काँटे के समान अनुभव होगा।

11) वे कर्मभोग भोगने वाले होते और आप कर्मयोगी हो। भोगने वाले नहीं हो लेकिन सदा के लिए भस्म करने वाले हो। ऐसा भस्म करते हो जो 21 जन्म कर्मभोग का नाम-

निशान न रहे। आयेगा तब तो भस्म करेंगे! आयेगा जरूर लेकिन आता है भस्म होने के लिए न कि भुगाने के लिए, विदाई लेने के लिए आता है क्योंकि कर्मभोग को भी पता है कि हम अभी ही आ सकते हैं फिर नहीं आ सकते इसलिए थोड़ा-थोड़ा बीच में चाँस लेता है। जब देखता है यहाँ तो दाल गलने वाली नहीं है तो वापस चला जाता है।

12) कर्मयोगी आत्मा के मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते। मुख पर कभी बीमारी का वर्णन नही होता, कर्मभोग के वर्णन के बदले कर्मयोग की स्थिति का वर्णन करते हैं क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।

13) चाहे पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन चुक्तू करायेंगे। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तु करना - यह है कर्मातीत बनने की निशानी। योग से कर्मभोग को मुस्कराते हुए सूली से कांटा कर भस्म करना अर्थात् कर्मभोग को समाप्त करना है। वह व्याधि का रूप न बने।

14- कोई भी छोटी बात को बड़ी बनाना या बड़ी को छोटी बात बनाना, परेशान होना वा अपने अधिकारीपन की शान में रहना, क्या हो गया या जो हुआ वह अच्छा हुआ - यह सब अपने ऊपर है। ऐसा निश्चय बुरे को भी अच्छे में बदल सकता है।

15) तन का हिसाब-किताब कभी प्राप्ति वा पुरूषार्थ के मार्ग में विघ्न रूप अनुभव न हो। कर्मयोगी कर्मभोग को चलायेगा, कर्मभोग के वश चिल्लायेगा नहीं। चिल्लाना अर्थात् कर्मभोग का बार-बार वर्णन करना वा बार-बार कर्मभोग की तरफ बुद्धि और समय लगाते रहना। छोटी सी बात को बड़ा विस्तार करना–इसको कहते हैं चिल्लाना और बड़ी बात को ज्ञान के सार से समाप्त करना–इसको कहते हैं चलाना। तो कभी कर्मभोग की कहानी का विस्तार नहीं करो। हेल्थ कॉनशियस के बजाए सोल कॉन्सेस बनो। यह योगी जीवन कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाला है।

शिवबाबा याद है ? 24-02-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"कोई न कोई तरीका ढूँढकर बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनना ही सच्चा व तीव्र पुरुषार्थ है" (दादी जानकी)

स्वयं को बाबा का हूँ, यह मानने से अन्दर ही अन्दर अभिमान से फ्री होते जायेंगे। समय प्रति समय बाबा इशारे में कहता ही रहता है कि रूहानी एक्ससाइज़ करते रहो। दिन में 2 बारी करो, 3 बारी करो। इस एक्सरसाइज़ को करने से अन्दर की वीकनेस चली जाती है, तो हम मजबूत बनते जाते हैं। जो बाबा ज्ञान का भोजन देता है उसे हज़म करने से रूहानियत बढ़ती है। उस खाने को खाने से खून बढ़ता है। आजकल बाहर में स्प्रिच्युवलिटी क्या है, वो शब्दों में नहीं सुना सकते हैं। शब्दों से भी कैच कर नहीं सकेंगे पर वायुमण्डल, वायब्रेशन, भावना सूक्ष्म काम करेगी। जरा भी रंग, देश, भाषा भेद कोई नहीं है। बाबा कहे यह मेरा समर्पण बच्चा है, जैसे ब्रह्मा बाबा तन मन धन से समर्पण हो गया, ऐसे हरेक को फीलिंग है कि मैं इस तरह से समर्पण हूँ? बाबा कहते करके वापस नहीं लेना है। परमात्म याद है ही बन्धन से छूटने के लिये। सूक्ष्म महसूस करके इस बंधन को कांटें और बन्धनमुक्त बनें।

सच्चा और तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वो कोई न कोई तरीका ढूँढता है बन्धनमुक्त फिर जीवनमुक्त बनने का। वो भी एक औरों के लिये मिसाल बन जाता है क्योंकि वो एक अनेकों के लिये सरप्राइज हो जाता है। जिसके कॉन्टेक्ट में आता है वह भी महसूस करते हैं यह इसकी लाइफ ऐसे कैसे बनी? जब से बाबा के बने हैं या लगन के अनुसार कोई कोई

हैं जो शुरू से नेचुरल सहज बन्धनमुक्त रहे हैं। बन्धनमुक्त सो जीवनमुक्त बनने से औरों की सेवा कर सकते हैं। आजकल ऐसी सेवायें बाबा करा रहा है इसके लिये हर समय सी फादर, फॉलो फादर... बस, कुछ सोचने की बात ही नहीं है, इस एक एक शब्द में कमाल है। अगर अभी समय प्रमाण हर देश वाले ऐसी स्थिति बना लेवें तो कल स्वर्ग हमारे हाथों में आ जायेगा।

बाबा आता ही है भारत में स्वर्ग बनाने के लिये, भारत हमारा देश है वो तो भविष्य में, अभी तो परमधाम हमारा देश है। बाबा पवित्रता की शक्ति से सफाई करके शोभनिक सुन्दर स्वर्ग के लायक बना रहा है। बच्चों को पहले माँ बाप स्नान कराते हैं, स्नान कराके श्रृंगार करते हैं। तो ज्ञान स्नान फिर योग से श्रृंगार फिर पढ़ो स्टडी करो। तो टाइम टेबल अनुसार ज्ञान स्नान, योग का श्रृंगार, कौन पढ़ा रहा है, क्या पढ़ा रहा है, क्या से क्या बना रहा है? जहाँ तक शरीर में आत्मा है तब तक पढ़ते रहेंगे क्योंकि यह पढ़ाई बहुत अच्छी है। दुनियावी पढ़ाई पढ़के पास होने के बाद वो प्रैक्टिकल प्रैक्टिस करता है, उस घड़ी उठाके पुस्तक नहीं पढ़ता है। तो हम प्रैक्टिकल में पुस्तक नहीं पढ़ते हैं। तो अन्दर ही अन्दर अपने आपको बहलाओ, अच्छी स्थिति बनाने के लिये इतना वखर (माल) मिलता है, उसको यूज़ करो। ओम् शान्ति।

2) ''हमारे साथ कोई कैसा भी व्यवहार करे, हमारे व्यवहार में सबके प्रति प्यार और रिगार्ड हो यही है व्यवहार शुद्धि''

बाबा कहता है जिसको पुरुषार्थ अच्छा करना हो तो मैं उसको गिफ्ट में लिफ्ट देता हूँ। जैसे स्थूल लिफ्ट से फट से जब चाहो ऊपर नीचे आ जा सकते हैं, उसके लिये कैसे जाऊं इतना ऊपर... यह सोचना नहीं पड़ता है। सीढ़ी के चित्र में दिखाया गया है कि 84 जन्म की सीढ़ी उतरते नीचे आ गये, अब फिर यहाँ से वहाँ जाना है या सोचते ही रहेंगे कि कैसे जायेंगे, कैसे करेंगे? सब बातों को छोड़ उड़ता पंछी की तरह से उड़ती कला के पुरुषार्थ की लिफ्ट से उड़ना होगा। बाबा अभी संगम के समय हम बच्चों पर बहुत मेहरबान है, कहता है मैं हर पल तुम्हारे साथ हूँ। सिर्फ हम कोई भी काम बाबा के नाम से, बाबा की श्रीमत से करें तो वो काम बहुत अच्छा होता है। कई कार्य असम्भव भी सम्भव हुए हैं, यह हमारा अनुभव है।

तो बाबा के महावाक्यों को अच्छी तरह से अनुभव करो तब उसे अमल में ला सकेंगे। अगर बॉडी कॉन्सेस हैं तो फिर बाबा के महावाक्य भी उसे समझ में नहीं आयेंगे। अगर अपने को आत्मा समझ सुनें तो परमात्मा बाबा शिक्षक के रूप में जो समझा रहा है वो समझ में आ जायेगा। बुद्धि और कोई बातों में बाहर भटकती है तो बाबा जो सुनाते हैं वो दिल से नहीं सुनते हैं। जो दिल से सुनते हैं वो त्रिनेत्री बन जाते हैं, भटकना छूट जाता है। त्रिनेत्री माना देह दुनिया से पार, मैं आत्मा परमात्मा की सन्तान हूँ, अर्न्तमुखी बन ऊपर चले गये, यह अनुभव करो और त्रिकालदर्शी बनो। जिसमें बाबा खुश, उसमें हम भी खुश, जहान भी खुश। जी खुश तो जहान खुश। जो खुश होगा, वो उसी नशे में नाचेगा। खुशी बांटने वालों पर बाबा खुश होता है। जो निकम्मी दिल को खराब करने वाली बात है वो अगर फैलती है आवाज में, तो बाबा से कितना दूर हो जाते हैं, एक दो से भी दूर। इस वायुमण्डल में एक दो को नजदीक देख खुश होते हैं। तो जिसको पुरुषार्थ करने की लगन होती है, तो कोई न कोई विधि निकाल करके पुरुषार्थ को कम होने नहीं देंगे। तो जितना पुरुषार्थ अच्छा करो, जितनी अच्छी तरह से पढ़ो उतना बाबा और टीचर खुश होता है। अपने आपको समर्पण कर, सम्पन्न बनने के लिये सच्ची दिल से पुरुषार्थ करने से हिम्मते बच्चे मददे बाबा, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। संकल्प और कोई है ही नहीं, कई बाबा के बच्चे सेवा कर रहे हैं। सबके लिये प्यार, रिगार्ड हो क्योंकि कैसी भी आत्मा है उसने बाबा को अपना बनाया है। भले कोई कैसा भी व्यवहार करे, पर हमारे व्यवहार में यही हो कि यह बाबा के बच्चे हैं, यह है व्यवहारिक शुद्धि। देखा गया है कि कईयों को दृष्टि का बहुत महत्व है क्योंकि बाबा के बच्चे बहन भाई हैं ना। और ब्राह्मणों के हाथ का बनाया हुआ शुद्ध भोजन, बाबा को भोग लगाके खाने से वो जैसा अन्न वैसा मन हो जाता है। फिर सब कुछ अच्छा लगने लगता है, सन्तुष्ट तृप्तात्मा का अनुभव होने लगता है। अच्छा, ओम् शान्ति।

3) ''अपनी विशेषता वा कला द्वारा दिल वा प्यार से सेवा करना माना बाबा की बैंक में जमा करना''

हम बाबा की याद में शान्त रहते हैं, बाबा मुस्कराता है तो बहुत अच्छा लगता है। सेकेण्ड में मुक्ति जीवनमुक्ति कहा जाता है, ऐसे सेकेण्ड में शान्त होने के अभ्यासी हो गये

हैं। कोई को जब कोई बात समझ में आती है, वो सेकेण्ड में ही तो आती है। अगर बुद्धि कहीं और लगी है तो टाइम लगाते हैं। फिर भी दिल से बाबा कहा तो सेकेण्ड है। परमधाम में सिर्फ शान्ति है, तो शान्तिधाम मेरा घर है, शान्ति का सागर मेरा बाप है। मैं आत्मा शान्त हूँ, भले शरीर में हूँ ऐसे पहले अपने को शान्ति से समझाओ। सुखधाम में सुख शान्ति दोनों हैं।

मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा है, घर मेरा शान्तिधाम है, सुखधाम में आना है। शान्त में योग में खींचना बाबा का काम है फिर योगी से कर्मयोगी बनना, यह हम बच्चों का काम है। राजयोग माना एक बाप दूसरा न कोई। कर्म करते भी बाप की याद न भूले तब कहे कर्मयोगी। बाबा ने हमारे चित्त को साफ करके शान्त कर दिया, दिल को खुश कर लिया। मन को शान्त कर लिया, 75 साल के ज्ञान का सार स्मृति स्वरूप बना दिया क्योंकि चित्त कहो वा दिल कहो, उसमें मैं कौन? मेरा कौन? तो बाकी सारी बातें खत्म होके ड्रामा बड़ा एक्यूरेट है, संगमयुग है, जो करना है अब कर ले। जो ड्रामा में होगा या कल कर लेंगे, यह नहीं कहना। आज करेंगे अब करेंगे, ऐसी शुद्ध भाषा हो। बाबा कल्याणकारी है, ड्रामा कल्याणकारी है। संगमयुग का ज्ञान बहुत अच्छा है, 5 हजार साल का चक्र पूरा करके अब बाकी थोड़ा समय है। उसके पहले हमें तैयार होके परमधाम जाना है।

बाबा कहता है जीते जी मर जाओ क्योंकि सब मतलब के साथी हैं। जो श्रेष्ठ कर्म करेंगे, यज्ञ में सफल करेंगे वही साथ में चलेगा। हरेक अपनी विशेषता से कला से दिल से सेवा करते हैं, प्यार से करते हैं तो बाबा की बैंक में जमा करते हैं। योगी को क्या चाहिए! एक कुटिया एक खटिया, दाल-रोटी खाके प्रभु के गुण गाना बस और कुछ चाहिए क्या? दुनिया में तो एक एक्ट करता है, दूसरा देखता है, पर यहाँ तो इस वर्ल्ड ड्रामा रूपी स्टेज पर भगवान कैसे करता कराता है, वो साक्षी हो देखते, अपना पार्ट अच्छे ते अच्छा बजाना है जिससे दूसरे को भी लगे कि हम भी ऐसे करें, जैसे भगवान इनसे कराता है वैसे करें। और कोई चिंतन नहीं, कोई बात नहीं, कुछ नहीं। ओम् शान्ति।

4) ''अन्दर की सच्चाई चित को आनंद स्वरूप बना देती है, जो सच्चा है वह खुशी में नाचता है''

देह के सम्बन्धों को तोड़, और सब बातों को छोड़, पुरानी बातों को भूल एक बाबा को याद करते हैं तो और कोई याद नहीं आता है। शरीर से न्यारे होते हैं तो बाबा का प्यार बड़ा सुख देता है। जो देह से, सम्बन्ध से, दुनिया से न्यारे बने हैं या बाबा के बच्चे बनने से हम न्यारे हो जाते हैं? जिसको बाबा से प्यार है, उसको प्यार में जो बाबा सुनाता है वो अच्छा लगता है। जिससे प्यार होता है, उसको देखना भी अच्छा लगता है। जब से बाबा के बने हैं तब से सच्चाई से चित्त आनन्द स्वरूप बन गया है। बाबा तो ज्ञान का, शान्ति का, प्रेम का सागर है, पतित-पावन, सर्वशक्तिवान है। हम आत्मा भी ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप, आनन्द स्वरूप, शक्ति स्वरूप हैं। शक्ति आ गई तो विकार चले गये। ज्ञान मिला तो शान्ति आई। प्रेम आया तो आनन्द आया।

माया पहले सुस्ती के रूप में आती है, बहाना बनाना सिखाती है। माया झूठा बनना सिखाती है, बाबा सच्चा बनना सिखाता है। माया चूही झूठा करके छिप जाती है। माया फालतू बातें सुनने बोलने से आती है। फिर कुछ कामना पूरी नहीं हुई तो क्रोध करेंगे या उससे नाराज़ रहेंगे, तो मतलब कुछ दुःख दिया, दुःख लिया तो कभी किसी से दुआ नहीं मिलेगी इसलिए बाबा को जानना माना माया को जानना। बाबा कहता है सच बोलो, थोड़ा बोलो, मीठा बोलो। जो सच बोलेगा वही थोड़ा और मीठा बोलेगा। सच्चा जो होगा वो अन्दर से खुशी में नाचता है। झूठा भले कितनी भी कोशिश करे, दिल में खाता है, कितना भी छिपावे पर वो अन्दर का झूठ उसे खुश रहने नहीं देगा। बाबा हमको देख खुश होता है, हम बाबा को देख खुश होते हैं, तो इससे हमारी दोनों आँखें बहुत अच्छी हो गई हैं। आपस में भी एक दो को देख खुश होते हैं। एक है खुशी की खुराक, दूसरा है खुशी का खजाना। तो बाबा जो ज्ञान की खुराक खिलाता है वो खाते जाओ, खाते रहो तो शक्ति आती जाये। तो खुशी हमें मजबूत बनाती है, खुशी दानी, महादानी, वरदानी बना देती है। बाबा बजाता है मुरली, मम्मा बजाती है सितार, तो मैं बजाती हूँ हार्मोनियम माना हार्मनी, हार मानी झगड़ा टूटा। विकारी की आँखें कैसी होती हैं और हमारी आँखें कैसी हैं, फर्क तो पता पड़ता है ना। जो अमृतवेला कभी मिस नहीं करता है, वो मीठा बन जाता है। जो मुरली मिस नहीं करता है, उसके मुख में सदा ही ज्ञान के रत्न होते हैं। फिर कुछ भी होता है तो वो सब बाबा ठीक कर देता है। ओम् शान्ति।

11-7-13

"बेफिकर बादशाह की स्थिति"

- गुल्जार दादी

ओम् शान्ति, सभी के दिल में कौन-सा शब्द आ रहा है? मेरा बाबा, मेरा क्यों कहते? क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। जैसे मेरा यह शरीर है, मैं आत्मा हूँ यह मेरा है, मैं नहीं हूँ तो भी याद क्या आता है? मेरा ही याद आता है ना। तो बाबा कहता है अभी यह कहो मेरा बाबा, फिर बाबा भी नहीं भूलेगा। तो सभी याद में रहते? पक्का! चार्ट चेक किया? मालिक बनें? पक्का, हाथ उठाओ जिन्होंने होमवर्क किया? मैजारिटी ने किया है, रिजल्ट तो अच्छी है, मुबारक हो। ऐसे ही बाबा ने कहा मैंने किया, आज बाबा ने क्या कहा? बस, जो भी मुरली से अच्छा लगे, वो याद कर लो, आज बाबा ने यह कहा। चलते-फिरते बाबा ने क्या कहा? यह कहा। भले कितने भी दफ्तर के काम में बिजी हो, तो भी यह सोच सकते हो ना! भण्डारे में खाना बना रहे हो तो भी सोच सकते हो। बस, बाबा कहता है याद ही करना है और कुछ थोड़ेही करना है।

तो आज बाबा ने बहुत अच्छा टाइटल दिया है, आज की सभा किसकी है? आज बाबा बेफिकर बादशाहों की सभा देख रहा है। तो बेफिकर हो या थोड़ा-थोड़ा फिकर आ जाता है? क्या होगा, कैसे होगा, दुनिया की हालत देख करके, पैसे का अभाव देख करके थोड़ा... परिवार कैसे चलेगा? नहीं। परिवार अगर बाबा को दे दिया, मेरा सो तेरा.. तो जिम्मेवार बाबा है। इतना निर्मोही होके चलाओ तो बाबा मदद जरुर करेगा, क्योंकि बाबा है ना। और देखा गया है फिकर से कुछ नहीं होता है, और ही चिंता में जो होना चाहिए वो भी नहीं होगा। दिमाग काम ही नहीं करता है। तो करते हैं होने के लिए लेकिन होता नहीं है इसलिए बाबा कहता है बस, मेरा बाबा... और कोई का थोड़ेही है, जन्म-जन्म में एक ही बाबा मेरा है और कोई मेरा नहीं।

तो आज सारा दिन चेक करना बेफिकर रहा? घर गृहस्थी में कोई-न-कोई बातें तो हो जाती हैं। लेकिन जिसके लिए फिकर करते हैं वो तो होता ही नहीं है फिर फिकर क्यों करें? वो करें जो प्रैक्टिकल होवे ना। इसमें तो और ही दिमाग यहाँ वहाँ भागेगा इसलिए बाबा कहते हैं बेफिकर बादशाह। जो भी फिकर आवे बाबा को दे दो। अपने पास नहीं रखो। रात्रि में सोने से पहले अपने आपसे पूछो कि सारा दिन में कितना समय खुश रहे? रहना है सदा खुश लेकिन कितना रहे कितना नहीं रहे, वो अपनी चेकिंग सोने से पहले ही करो। अभी तो चेकिंग मास्टर हो गये ना, अपना चार्ट देखते हो ना। सीट पर बैठ करके देखो अरे मन तूने क्या किया? बुद्धि तुमने ठीक नहीं सोचा। यह कर्मेन्द्रियां, हाथ-पाँव तुमने ऐसा काम क्यों कर दिया? मालिक होके पूछो। बच्चे को कितना जल्दी पकड़ लेते हैं, क्यों किया? क्या किया? बिचारे को चांटा भी मार लेंगे, अपने को चांटा मारो ना। बाबा कहता है मीठे बच्चे सावधान, और क्या कहेगा बाबा।

तो आज का स्वमान बेफिकर बादशाह। सतयुग में दो ताज मिलते हैं। अभी तीन तख्त मिलते हैं। विचार करो आज बाबा ने मुरली में कितनी प्वाइंट सुनाई? मानो 8 प्वाइंट सुनाई तो आठों ही प्वाइंट मेरी बुद्धि में हैं? जिस समय सुनते हो उस समय तो नोट करते हो ना! आज बाबा ने यह कहा यह कहा...उसे 3-4 बारी दोहराओ तो पक्का याद आ जायेगा। और सदा खुश रहने वाले बनो क्योंकि खुशी है सदा हमारे पास बैठने वाली। बाबा कहते हैं खुशहाल, तो सभी खुशहाल है ना? थोड़ा बहुत कुछ होता है तो आया गया, आयेगा तो सही, कलियुग है ना आयेगा लेकिन बैठे नहीं, आया और उसको लेन-देन करके दो मिनट सोचके खत्म करो। जैसे दफ्तर में बहुत काम होता है ना, तो कोई जल्दी-जल्दी खत्म कर देते हैं, कोई इकट्ठा करते जाते हैं फिर परेशान होते हैं। तो सदा बेफिकर बादशाह, सदा खुश। हमेशा देखो दो ताज है? क्योंकि बादशाह हो तो बादशाह को ताज तो चाहिए ना। तीन तख्त हैं। आत्मा का पहला तख्त यह भ्रकुटी है फिर बाबा की दिल का तख्त है। फिर भविष्य तख्त के अधिकारी

तो हैं ही। अपने से बातें करो। इससे क्या होगा? दूसरी बातों में बुद्धि नहीं जायेगी। नहीं तो बहुत जन्मों का अभ्यास पड़ा हुआ है, तो दूसरी दूसरी बातों में चले जायेंगे। तो आज नशा क्या रहेगा? कोई फिकर की बात आये तो खत्म कर देंगे। बाबा कहे मदद लो और बाबा नहीं देवे, यह नहीं हो सकता है। तो सभी आज सारा दिन बेफिकर बादशाह रहना क्योंकि सतयुग की राजाई भी कुछ नहीं है, वो भी कॉमन है। अभी बादशाह भी तो बेफिकर भी और फिकर अगर आवे तो छोटे बच्चे बन बाबा को दे दो, बाबा यह तुम सम्भालो।

बाबा रोज़ कोई-न-कोई टाइटल देता है उसी टाइटल को स्मृति में रखो, कितने टाइटल भगवान हमें दे रहा है। दुनिया में कोई से कोई को कुछ एक-आधा टाइटल मिलता है तो कितने फंक्शन आदि करके खुशियाँ मनाते और हमको तो डायरेक्ट भगवान टाइटल्स दे रहा है, हम दिल में जमा कर देते हैं। वाह मेरा बाबा वाह! बस, और है क्या? तो कल रिजल्ट सुनाना बेफिकर रहे या नहीं? यह संगम है ही सदा बेफिकर रहने के लिए। अब बेफिकर बनेंगे तभी आधाकल्प बेफिकर राजाई करेंगे। तो खुश! या थोड़ा खुश... थोड़ा-थोड़ा संकल्प है कि यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा... ऐसा तो नहीं है ना? अरे, फिकर बाबा को दे दो, बाबा सम्भाल लेगा आपेही, बड़ा बाबा है इसलिए उसको फिकर दे दो।

अच्छा है, हम देख रहे हैं मातायें भी कांध ऐसे कर रही हैं, भाई भी ऐसे कर रहे हैं। अरे! यह भाग्य, फिर कब मिलेगा? और हम आपस में बाबा के बच्चे ऐसे रोज़ क्लास में मिलते रहें, कम है क्या? और भगवान हमको मुरली सुनावे। वह एक दिन भी मिस नहीं करता। तो हम भी जो बाबा कहता है वो मिस नहीं करे ना।

बाबा की कमाल यह है कि बाबा ने लास्ट डे तक भी तकिया आदि का सहारा नहीं लिया, लास्ट तक सीधा ऐसे रहा। और बाबा उस दिन सुबह के टाइम मुरली नहीं चला सका तो शाम को क्लास में आया, मुरली चलाई। लास्ट के वो तीन शब्द याद होंगे जरुर। तो ब्रह्मा बाबा ने जो करके दिखाया तो फॉलो फादर, हमको करना ही है बस। दूसरी बातें देखो ही नहीं, ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है। बस। भले साकार में नहीं देखा पर बाबा की हिस्ट्री से पता पड़ता है ना कि बाबा क्या है? सभी को बाबा से प्यार बहुत है ना! बहुत प्यार जिससे होता है वो भूलता नहीं है। कोई चीज़ से भी प्यार होता है तो वो चीज़ भी नहीं भूलती है, यह तो बाबा है और मेरा बाबा कहते हैं क्योंकि मेरा कभी भूलता नहीं है। तो मेरा बाबा कहते हो तो भूलता क्यों है? सदा याद में रहना। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

नवरात्रि - चैतन्य शिव शक्तियों का यादगार

यह नवरात्रि का त्योहार हम कल्प पहले वाली शक्तियों के आह्वान का दिन है। सर्वशक्तिमान बाप ने गुप्त रूप में हम शक्तियों को शक्ति दी है। असुर संहारिनी, भक्तों की रक्षा करने वाली हम सब शिव शक्तियां हैं। शिव-शक्ति अर्थात् शिव परमात्मा से प्राप्त हुई शक्ति जिससे हम असुर संहारनी बने हैं। स्वयं से अथवा सारे विश्व से आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने का काम हमारा है। शक्तियों का ही गायन है असुर संहारनी, दूसरे तरफ शीतला देवी का भी गायन है। तो क्या आप सबको भक्तों का आह्वान सुनाई नहीं दे रहा है? भक्त हमें पुकार रहे हैं, चिल्ला रहे हैं, ओ माँ, ओ माँ,... इन शक्तियों को ब्रह्मचारिनी कन्या ही दिखलाया है। आज जब मैं आपके सामने आई तो मैं भक्तों की आवाज सुनकर आई थी। प्यारे बाबा के गुण गा रही थी - ओ सर्वशक्तिमान बाबा, आपने हमें कितना गुप्त रूप में रखा है, जिनका आज भक्त गायन कर रहे हैं। स्वयं से पूछना है - क्या हम वही पतित संस्कारों को संहार करने वाली शक्ति हूँ? शक्तियों को सहस्त्र भुजाधारी दिखलाते हैं, तो क्या हम ऐसी शक्तियां हैं?

सवेरे योग में यही महसूस हो रहा था कि हमारे हाथ में ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र हैं, योग का स्वदर्शन चक्र है। दैवी गुण

रूपी कमल फूल है, भिन्न-भिन्न भुजा में भिन्न-भिन्न अस्त्र-शस्त्र हैं। ये हमारा यादगार है कि हम सदा शस्त्रधारी भुजायें हैं। कोई भुजा हिलती-डुलती तो नहीं है? बाबा ने हमें अष्ट शक्तियाँ दी हैं। क्या ऐसे कहेंगे कि 6 शक्तियां तो हैं, दो नहीं हैं?

हम असुर संहारिनी हैं तो स्वयं में देखो कि आसक्ति रूपी असुर तो नहीं है? मान-शान रूपी असुर तो नहीं है? मोह रूपी असुर तो नहीं है? शक्तियां कहें मेरे में छोटा मोटा असुर है तो क्या उन्हें असुर संहारिनी कहेंगे? शक्तियाँ जितनी संहारी हैं, उतनी कल्याणी हैं। निर्भय, निर्वैर हैं। हमारे में भय है? हमारा किसी से वैर है? शक्तियों की महिमा में ऐसा नहीं कहा जाता है कि भक्तों की वैरी हैं, नहीं। असुरों की संहारी भक्तों की रखवाली करने वाली हैं। हम सबका उद्धार करने वाली उद्धार-मूर्त शक्तियाँ हैं, तो हमारे में सर्व के प्रति स्नेह, सहयोग की भावना रहती है या किसी के प्रति घृणा की, ईर्ष्या की, नफ़रत की भावना भी रहती है? हमें बाबा से सर्व शक्ति लेकर सबको जीयदान देना है, प्राणदान देना है। बाबा ने हमें कितना महान बनाया है, कितना हमारी भक्त महिमा करते, कितना हमारा-मान-शान-गायन आधाकल्प से भक्त गाते हैं! जब ऐसी ऊंची सीट पर बैठ अपना यादगार देखते तो बाबा के गुण गाते। जग मेरे मान-शान का गायन करता, मेरे बाबा के साथ मेरा गायन है। हमें कहा ही गया है जगत की मातायें, जगत अम्बा, दुर्गा, काली, शक्ति। मैं जगत की माँ हूँ, सब मेरे लिए छोटे बच्चे हैं क्योंकि बाबा कहते कि बिचारों को यही ज्ञान नहीं है कि इनका बाप कौन है। बिचारे उनको कहा जाता है, जिनको ज्ञान नहीं। बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी, महान से महान बनाया है, कितनी ऊंची सीट पर बाबा ने बिठाया है।

तो भाषण करने से पहले देखो मेरी स्टेज ठीक है, जो भक्त मेरा साक्षात्कार करें! जब तक हम स्वयं की सीट पर या स्टेज पर नहीं बैठे हैं तब तक हम दूसरों की क्या सेवा करेंगे। अगर सदा मेरी वह स्थिति नहीं तो भक्त मेरा क्या साक्षात्कार करेंगे? सबको सर्विस का बहुत शौक रहता है, जोश रहता है। सेवा के साथ-साथ स्वयं के स्थिति की सीट भी ठीक हैं? जैसे लॉ और लव का बैलेन्स, जीवन में बराबर रखते हैं, वैसे सेवा के साथ-साथ स्वयं की स्टेज है? प्लैन बनायेंगे तन-मन-धन से सर्विस में लग जायेंगे, परन्तु कई बार अपनी स्टेज खो बैठेंगे। उसको भाषण लिए कहा मुझे नहीं कहा, इसे सब चान्स देते हैं, मुझे नहीं। बड़े का मान रखते हैं, छोटों का नहीं। पता नहीं कितने सवाल सर्विस की स्टेज के साथ उठाते हैं। गये स्टेज तैयार करने और अपनी स्टेज खराब कर दी। उस समय अपनी स्टेज को तैयार करने का नहीं रहता। अरे तुम अपना रिकार्ड क्यों खराब करते हो? चले अनेकों का सुधार करने और अपना बिगाड़ कर लिया।

तो सदा यह नशा रहे कि हम वहीं शेरणी शक्ति हैं। हम ऐसे ऊंचे स्थान पर बैठे हैं। हमारा बाबा कितना महान है, फिर भी कितना निर्माण है। सदा ये सोचो हम गॉडली स्टूडेन्ट हैं। सब सब्जेक्ट में हमारा बैलेन्स बराबर हो। हमारी चार सब्जेक्ट हैं:- 1-ज्ञान 2- योग 3-दैवीगुणों की धारणा और 4-सेवा । लेकिन दिखाई देता है पहले सेवा और ज्ञान फिर बाद में योग और धारणा, इसलिए कभी उदासी के दास बनेंगे, कभी मूड ऑफ के दास बनेंगे।

बाबा ने हमें बनाया है - 1. सहज-योगी, 2. ज्ञानी-योगी 3. शीतल-योगी। योगी सदैव हर्षित मुख रहते हैं। हम संगम के देवी-देवतायें हैं, अगर हमारे में अभी धारणा है तो भविष्य में भी रहेगी। देवताई संस्कार अभी ही हम भर रहे हैं। हमारे अन्दर से आसुरी संस्कार खत्म हो गये हैं या कभी जोश आ जाता है?

हम पतित-पावन बाप की सन्तान हैं। स्वयं से पूछो मैं पतित-पावन की सन्तान कभी हमारे अन्दर पतित संकल्प तो नहीं उठते हैं? किसी पतित आत्मा का वायब्रेशन तो नहीं आता है? मैं असुर संहारिनी हूँ, असुर कहीं मेरा तो संहार नहीं करते? आज की दुनिया में कीचक जैसे लोग घूमते रहते हैं, जिस बात के पीछे लोग हैं हम उनसे ऊपर हैं?

दुनिया समझती है इस पतित दुनिया में कोई बाल-ब्रह्मचारी बनके दिखावे, प्रवृत्ति में पावन रहकर दिखावे यह तो बहुत मुश्किल है इसलिए सन्यासी जंगल में चले जाते हैं। प्यारे बाबा ने हम नारियों को आगे बढ़ाया है। औरों ने तो ठुकराया है और बाबा कहते तुम शक्तियां स्वर्ग के द्वार खोलने के निमित्त हो। हमारा बहुत बड़ा गुलदस्ता है, अगर इस शक्ति के झुण्ड के बीच कोई भी एक गन्दे वायब्रेशन में बैठा हो तो इस झुण्ड के बीच वो क्या दिखाई देगा? एक के नाम के कारण सभी का नाम बदनाम होता है, इसलिए हे शक्तियां अपने झुण्ड को सदा सेफ रखो। ऐसा न हो जो नाम बदनाम हो। कीचक के 20 मुख होते इसलिए उनसे बहुत सम्भाल करो। भोली-भाली बनकर नहीं रहना है। ओम् शान्ति।